अध्याय 1

पत्रकारिता का सामान्य परिचय

अध्याय - 1
पत्रकारिता का सामान्य परिचय

1. पत्रकारिता का अर्थ एवं पारिभाषिक स्वरूप :

1.1. पत्रकारिता का अर्थ :

पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है। इसका कार्य जनता तथा जन–नेताओं के समक्ष लोक–कल्याण सम्बन्धी कार्यों की सूची प्रस्तुत करना है। सम्पादक विखेमस्टीड के अनुसार, ''पत्रकारिता कला भी है, वृत्ति भी और जन–सेवा भी ... जब तक कोई यह नहीं समझता कि मेरा कर्तव्य अपने पत्र के द्वारा लोगों का ज्ञान बढ़ाना, उनका मार्ग–दर्शन करना है तब तक उसे पत्रकारिता की चाहे जितनी भी ट्रेनिंग दी जाए वह पूर्णरूपेण पत्रकार नहीं बन सकता। ...

"सच्चे पत्रकार के लिए यह भी आवश्यक है कि वह यह बात भी न भूले की पत्र को व्यापारिक और व्यावसायिक दृष्टि के आधार पर ही उसको अपने कर्तव्य की पूर्ति का बल मिल सकता है।"

(पत्रकारिता प्रशिक्षण, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, राकेश शर्मा, पृ.सं. ५)

पत्रकारिता का सामान्य अर्थ है – **''पत्रकार का काम या व्यवसाय।''** पत्रकारिता के लिए अँग्रेज़ी में 'जर्नलिज़्म' शब्द व्यवहृत होता है जो 'जर्नल' से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' है। यह 'जर्नलिज़्म' शब्द फ्रेंच

भाषा के 'जर्नी' शब्द से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है – एक दिन का समूचा कार्य या विवरण प्रस्तुत करना। पत्रकारिता दैनिक जीवन की घटनाओं को संचार के माध्यम द्वारा प्रकाश में लाती है।

''पत्रकारिता पत्र–पत्रिकाओं के लिए समाचार, लेख आदि एकत्रित तथा सम्पादित करने, प्रकाशन आदेश आदि देने का कार्य है।''

– डॉ. बद्रीनाथ कपूर

(हिन्दी पत्रकारिता इतिहास एवं संरचना, प्रो. रमेश जैन, पृ.सं. २)

"समय और समाज के सन्दर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व–बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं।

पत्रकारिता अल्प या निश्चित कालावधि में समाचारों, भावों एवं विचारों को अभिधापरक कथन और सर्जनात्मक विधाओं के माध्यम से व्यापक स्तर पर बृहत्तम संप्रेषण करने की कला है। इसके द्वारा विश्व के समग्र वाङ्मय, सामयिक लोक–जीवन के परिवर्तनचक्र, सभ्यता–संस्कृति के विविध आयामों तथा ज्ञान–विज्ञानयुक्त विचार–शृंखला को समझने और महसूस करने की गहरी निर्लिप्त दृष्टि एवं वैज्ञानिक तर्क–प्रज्ञा प्राप्त होती है। फलतः पत्रकारिता अधिकतम पाठकों को कम कीमत पर नवचिंतन तथा नव–वैचारिक–आयाम देकर बौद्धिक युग का सूत्रपात करती हैं। **पत्रकारिता एक ऐसी शक्ति है, जो सामाजिक विकृतियों को दूर करके जनमानस में मंगलकारी सुधारों और निर्माणकारी तत्वों एवं मूल्यों की प्रतिष्ठा करती है।**

''पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है इसके बगैर समाज को बदलना असंभव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जायेगा।''

– महादेवी वर्मा

(पत्रकारिता के नए आयाम, एस.के. दूबे, महादेवी वर्मा, पृ.सं. ६२)

पत्रकारिता का मूल ध्येय संचार के माध्यमों से अन्याय का उद्‌घाटन करना, दोष परिहार्य करना, सलाह देना, असहायों की सहायता करना और मित्रविहीन लोगों को मित्रवत मार्ग दिखाना है। **वास्तव में पत्रकारिता जीवन की विविधात्मक, तथ्यात्मक और यथार्थ परिस्थितियों को चारों कोनों पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से एकत्र करके पत्रकार द्वारा जनमानस तक प्रेषित करने का सशक्त माध्यम है।**

सारांश यही है कि ज्ञान और विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ शब्द, ध्वनि तथा चित्रों के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है। यह वह विधा है जिसमें सभी प्रकार के पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों, तथा लक्ष्यों का विवेचन होता है।

1.2. पत्रकारिता की प्रमुख परिभाषाएँ :

पत्रकारिता की हिन्दी परिभाषाएँ :

- ''पत्रकारिता वह विधा है, जिसमें पत्रकारों के कार्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है। जो अपने युग और अपने संबंध में लिखा जाए, वही पत्रकारिता है।''

— डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र

(हिन्दी पत्रकारिता इतिहास एवं संरचना, प्रो. रमेश जैन, पृ.सं. २)

- ''पत्रकारिता कोई पेशा नहीं, यह जन–सेवा का माध्यम है। लोकतांत्रिक परम्पराओं की रक्षा करने, शांति और भाई–चारे की भावना बढ़ाने में इसकी भूमिका है।''

— डॉ. शंकरदयाल शर्मा

(आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.सं. १४)

- ''ज्ञान और विचार, शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुँचाना पत्रकारिता है।''

— डॉ. रामचन्द्र तिवारी

(राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता, विश्वनाथ सिंह, पृ.सं. ६२)

- "पत्रकारिता में आकर्षण है, स्पन्दन है, शक्ति है, अनुभव की अनुभूति के लिए अग्रसर करने की उत्प्रेरणा है तथा सत्य को जानने का मार्ग है।"

— डॉ. श्रीपाल शर्मा

(पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त, डॉ. श्रीपाल शर्मा, आभार से उद्धृत)

- "पत्रकारिता विशिष्ट देश, कला, परिस्थितिगत तथ्यों को अमूर्त, परोक्ष मूल्यों के संदर्भ और आलोक में उपस्थित करती है।

— डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय

(पत्रकारिता : सिद्धान्त और प्रयोग, डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, पृ.सं. ३)

- "प्रकाशन, संपादन, लेखन एवं प्रसारणयुक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है।"

— चेंबर्स और न्यूवेब्स्टर्स डिक्शनरी

(हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास एवं संरचना, पृ.सं. २)

- "पत्रकारिता शीघ्रता में लिखा जाने वाले साहित्य है।"

— मैथ्यू अर्नल्ड

(पत्रकारिता प्रशिक्षण, डॉ. राजेन्द्र मिश्र, राकेश शर्मा, पृ.सं. ६)

▪ "पत्रकारिता वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में समस्त सूचनाएँ संकलित करते हैं, जिसे हम स्वतः कभी नहीं जान सकते।"

– हवर्ट ब्रूकर

(हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास एवं संरचना, पृ.सं. ३)

▪ "पत्रकारिता 'पाँचवाँ वेद' है जिसके द्वारा हम ज्ञान–विज्ञान सम्बन्धी बातों को जानकर अपने बन्द मस्तिष्क को खोलते हैं।"

–इन्द्र विद्यावाचस्पति

(आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.सं. १)

▪ "पत्रकारिता को मैं रणभूमि से भी अधिक बड़ी चीज़ समझता हूँ। यह कोई पेशा नहीं, बल्कि पेशे से कोई ऊँची चीज़ है। यह एक जीवन है, जिसमें मैंने अपने को स्वेच्छापूर्वक समर्पित किया।"

(आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.सं. १)

पत्रकारिता की अंग्रेज़ी परिभाषाएँ :

★ "Journalism is THE TIMES and the GUARDIAN, the DAILY MIRROR and the SUN."

- J.L. Nehru

(आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.सं. १)

★ **"The objective of Journalism is service."**

- M.K. Gandhi

(आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.सं. १)

★ **"Journalism : The profession of conducting or writing for public journals."**

- Chamber Dictionary

(Chambers Dictionary, Volume 1, Pg. No. 334)

★ **"Journalism is a contemporary report of the changing scene, intended to inform readers of what happening around them."**

- G.F. Mott

(Trends in Modern Journalism, M.C. Miller, Pg. No. 132)

★ **"Journalism is the systematic and reliable dissemination of public information, public opinion and public entertainment by modern mass media of communication."**

(www.printingroom.com)

★ **"Journalism is business of timely knowledge, the business of obtaining the necessary facts, of evaluating them carefully and of presenting them fully and of acting on them wisely."**

(Encyclopedia of Journalism and Mass Communication, Vol. 2, Om Gupta, Pg. No. 114)

★ **"Nothing less than the highest ideals, the most scrupulous anxiety to do right, the most accurate knowledge of the problems it has to meet and a sincere sense of social responsibility will save Journalism."**

(Encyclopedia of Journalism and Mass Communication, Vol. 2, Om Gupta, Pg. No. 262)

2. पत्रकारिता का उद्‌भव एवं विकास :

हिन्दी पत्रकारिता का उदय और उसके विकास की कहानी भारत के नवजागरण काल की कहानी से जुडी हुई है। पत्रों का प्रकाशन बंगाल, चेन्नई, मुम्बई से इसलिए प्रारम्भ हो पाया था क्योंकि ये प्रदेश ही सबसे पहले अंग्रेज़ों से प्रभावित हुए थे। धीरे–धीरे चेतना का विकास पूरे देश में हुआ तथा भारतीय भाषाओं में पत्र प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हुआ।

सही अर्थों में भारतीय पत्रकारिता के दूसरे अध्याय का प्रारम्भ राजा राममोहन राय द्वारा संपादित 'संवाद कौमुदी' नामक समाचार पत्र से होता है। देश में विपरीत स्थितियाँ रहते हुए भी बहुत जगह से समाचार पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ और इस क्रम में 30 मई सन् 1826 को हिन्दी का पहला समाचार पत्र ''उदन्त मार्तन्ड'' प्रकाशित हुआ।

यह समाचार पत्र प्रति मंगलवार को कलकत्ता में प्रकाशित होता था। लगभग एक वर्ष और सात माह तक इसका प्रकाशन हुआ इसके बाद इसका प्रकाशन बंद हुआ। इस पत्र के शीर्ष पर यह श्लोक लिखा रहता था

दिवाकान्त विना ध्वान्तान्तं न चाप्नोति तद्वज्जगत्यज्ञलोकः।

समाचारसेवामृते ज्ञप्तमाप्तुं न शकनोति तमाकरोमीति यत्नः।।

उदन्त मार्तण्ड प्रकाशन बंद होने के बाद 10 मई सन् 1829 को ''बंगदूत'' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। बंगाल से प्रकाशित होने वाला अगला समाचार पत्र ''प्रजा मित्र'' था। यह समाचार पत्र सन् 1834 में कलकत्ता में प्रकाशित हुआ था। इस पत्र के विषय में डॉ. रामरतन भटनागर ने लिखा है –

"It is highly probable that paper saw the light of the day; on what date, in what form and under what editorship, we cannot guess. There is nothing available to hazard the opinion."

11 जून सन् 1846 को कलकत्ता से 'मार्तण्ड' नाम का समाचार पत्र प्रकाशित होने लगा। 1849 में कलकत्ता से ''जगदीप भाष्कर'' का प्रकाश हुआ था। ''उदन्त मार्तण्ड'' के बंद होने के 23 वर्ष बाद युगल किशोर शुक्ल ने सन् 1850 में ''रामदण्ड मार्तण्ड'' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। सन् 1868 में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने काशी से ''कविवचन सुधा'' मासिक पत्रिका प्रारम्भ की।

भारतेन्दु जी स्वयं उत्कृष्ट कोटि के साहित्यकार थे इसलिए उन्होंने हिन्दी के कवियों और लेखकों को साहित्य के संस्कार दिए। सन् 1883 में 'इन्द्रप्रस्थ प्रकाश' और सन् 1884 में ''वैष्णव पत्रिका'' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। सन् 1865 में ''हिन्दुस्तान'' प्रकाशित हुआ।

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ होने के कुछ वर्ष पूर्व देश में स्वतंत्रता आंदोलन गति पकड़ चुकी थी। साहित्यिक और समाचार–पत्र–पत्रिकाओं में देश प्रेम की कविताएँ और निबन्ध छपते थे साथ ही विदेशी सरकार के अत्याचारों का खुलासा होता था। समाचार पत्रों के प्रकाशन के औचित्य को रेखांकित करते हुए अकबर इलाहाबादी ने ठीक ही कहा है –

खींचो न कमानों को न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।।

सन् 1907 से नये युग का सूत्रपात होता है। इस दौरान जिन पत्रों का प्रकाशन हुआ उनमें ''अभ्युदय'' और ''हिन्द केसरी'' प्रमुख है। सन् 1920 में दैनिक समाचार पत्रों का युग प्रारम्भ होता है। सन् 1920 में ही लगभग 8 दैनिक पत्रों का प्रकाशन देश में प्रारम्भ हुआ।

सन् 1900 में प्रयाग इंण्डियन प्रेस से हिन्दी की साहित्यिक पत्रिका ''सरस्वती'' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में ''समाचार सुधा वर्षण'' का स्थान प्रमुख है। यह हिन्दी का पहला दैनिक है। इसी समय इलाचन्द्र जोशी की 'चाँद' व 'विश्वमित्र' पत्रिका और गांधी जी की 'नवजीवन', 'हरिजन', 'यंग इण्डिया' पत्रिका का प्रकाशन हुआ।

के.एम. पणिकर ने 1920 में ही 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का संपादन किया। 1922 में लखनऊ से 'माधुरी', 1923 में 'अर्जुन', 1925 में 'सैनिक' समाचार–पत्रों का प्रकाशन आगरा से हुआ। 1935–36 में अमृतलाल नागर ने 'सिनेमा समाचार' पाक्षिक पत्रिका का संपादन किया। 1945 में जवाहर लाल नेहरु ने ''कौमी आवाज'' का संपादन किया, 1947 में 'नवभारत' (आज का नवभारत टाइम्स) प्रकाशित हुआ।

सभी भारतीय समाचार–पत्रों का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना की भावना उद्दीप्त करना व स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना था। उस समय समाचार–पत्र ही एक मात्र ऐसा माध्यम था जिसके द्वारा समाज में

पनप रही कुरीतियों के प्रति जनता का ध्यान आकर्षित किया जा सकता था और उनमें देश भक्ति की भावना पैदा की जा सकती थी।

3. पत्रकारिता का स्वरूप एवं उद्देश्य:

3.1. पत्रकारिता का स्वरूप:

मानवीय समाज विविध क्रिया–कलापों की एक जीवन्त प्रयोगशाला है। समाज में समय के अनुरूप निरन्तर कुछ न कुछ नया घटता रहता है। निरन्तर बदल रहे समाज की गतिविधियों की जानकारी समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने का काम पत्रकारिता करती है। **डॉ. धर्मवीर के शब्दों में ''पत्रकारिता केवल खबरें इकट्ठा करना और छापना मात्र नहीं है।''**

वह मनुष्य और मनुष्य के बीच का सम्प्रेषण सामयिकता और इतिहास की सम्पूर्ण गति से जोड़ने का प्रयास है और कुल मिलाकर समाज के बाहरी विवरण के साथ–साथ उसके आन्तरिक अर्थ को जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास है और बनते हुए इतिहास को मानवीय मूल्य–मर्यादा की ओर मोड़ते रहने का अनवरत साधन है।

प्रत्येक युग में मनुष्य ने जीवनयापन के स्वरूप को बदला है या फिर यूं कहें कि बदले समय परिवेश के आधार पर जीवन कम बदलता रहा है जिसे परिवर्तन के नाम से जाना जाता है। असल में यह मनुष्य जीवन

का बाहरी आवरण है। अन्दर से मनुष्य की प्रवृत्तियाँ न्यूनाधिक वही है जैसी आदि मनुष्य की थीं। इन अर्थों में काम, क्रोध, लोभ, मोह जैसी प्रवृत्तियाँ आती है। इन प्रवृत्तियों के अतिरिक्त मनुष्य में ''सर्वे सुखिनः सन्तु'' की भावना भी होती हैं। जो इस सृष्टि में मनुष्य के अतिरिक्त किसी अन्य प्राणी में नहीं है। मनुष्य की इसी विकलता ने एक–दूसरे के सुख दुःख और उत्थान, पतन आदि को जानने और समझने का प्रयास किया है। इसी भावभूमि पर पत्रकारिता का जन्म हुआ है।

''समाज से लेकर समाज को ही वापस सौंपना पत्रकारिता का काम है।'' **[www.raftar.com]**

पत्रकारिता का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। लोकतंत्र में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि जनता को देश–विदेश की गतिविधियों से परिचित कराने के लिए वही एक मात्र साधन है। जैसे–जैसे बदलाव आते है पत्रकारिता का स्वरूप भी बदलता रहता है। नवीनता ही इस बात का प्रमाण है कि जीवन गतिशील है और पूरा मानवीय समाज रोज–रोज जीवन के नव आयाम निर्धारित करता है। यथार्थ को आदर्शोन्मुखी बनाने का काम भी पत्रकारिता करती है।

''पत्रकारिता जनमत और जन–दृष्टिकोण को प्रकट करने का भी सर्वोत्कृष्ट माध्यम है।''

(हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास एवं संरचना, प्रो. रमेश जैन, पृ.सं. ५)

पत्रकारिता के स्वरूप को निम्न बिन्दुओं में दर्शाया जा सकता है।

1. समाज की गतिविधियों का दर्पण :

पत्रकारिता समाज की गतिविधियों का दर्पण है। समाज में कब, कहाँ, क्यों, कैसे और क्या हो रहा है? इन सब तथ्यों को जानने का एकमात्र साधन पत्रकारिता है। पत्रकारिता सामाजिक जीवन की सत्–असत्, दृश्श–अदृश्य और शुभ–अशुभ छवियों को दिखाने वाला दर्पण है। समाज में फैली हुई कुरीतियों, अंधविश्वासों, रूढ़ियों के प्रति भी पत्रकारिता संघर्ष छेड़ती हुई समाज में उन बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करती है।

हाल ही में सार्वजनिक पदों और जनता के धन का लगातार दुरुपयोग करने वाले व्यक्तियों की हकीकत को स्टिंग ऑपरेशन के माध्यम से जनता के सामने लाया गया। साथ ही उन्हें जवाबदेही के लिए विवश किया गया। इसी क्रम में उल्लेखनीय है कि पत्रकारिता समाज में जो कुछ भी घटित होता है चाहे वह राजनीतिक, धर्म, समाज, साहित्य आदि किसी का भी अंग क्यों न हो, उसका विश्लेषण करती हुई समाज की भविष्यदृष्टा बन जाती है।

''पत्रकारिता के पेशे में किसी व्यक्ति का आना उसके लिए सबसे अधिक गौरव की बात है।'' **– सी.पी. स्काट**

(हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास एवं संरचना, प्रो. रमेश जैन, पृ.सं. ४)

2. सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम :

पत्रकारिता संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। आज सूचना प्रौद्योगिकी ने रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, कंप्यूटर, इंटरनेट, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ आदि ऐसे माध्यम दिए है जिससे विश्व की दूरी समाप्त हो गई है। सारा विश्व एक कुटुम्ब की भाँति नज़र आता है। समाज में घटने वाली प्रत्येक घटनाएँ चाहे वह राजनीति के क्षेत्र की हो, चाहे शिक्षा एवं अर्थ–नीति से संबंधित हो, चाहे साहित्यिक क्षेत्र की हो, सभी के संप्रेषण का कार्य पत्रकारिता करती है।

3. शासक और शासित के मध्य सुदृढ़ कड़ी :

पत्रकारिता शासक और शासित के मध्य संबंधों की सुदृढ़ भूमिका निभाती है। वह लोगों को राष्ट्र से और राष्ट्र को लोगों से जोड़ती है। सरकार की समय–समय पर की गई घोषणाएँ, नीतियाँ समाचार पत्रों में प्रकाशित होती है जिससे यह पता चलता है कि जनता किन–किन नीतियों का अनुसरण कर रही है। यही नहीं, जनता में जो भ्रामक धारणाएँ या भ्राँतियाँ फैली रही होती है, उन सबका निराकरण शासक समाचार पत्र के माध्यम से ही करता है। अतः निःसंदेह कहा जा सकता है कि पत्रकारिता शासक एवं शासित दोनों के मध्य की सुदृढ़ कड़ी है।

4. पत्रकारिता-प्रेरणादायिनी एवं पथ-प्रदर्शिका :

पत्रकारिता किसी भी राष्ट्र या देश के लिए प्रेरणादायिनी हो सकती है। वह सामाजिक जागरूकता की परिचायक है और पथ–प्रदर्शिका को भी

अभिव्यक्त करती है। समाचारपत्र के संपादकीय लेख बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। इनके माध्यम से संपादक राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक अन्य सामयिक मुद्दों तथा ज्वलंत समस्याओं पर पूर्वाग्रह से रहित होकर अपने विचार व्यक्त करता है। अतः कहा जा सकता है कि पत्रकारिता किसी भी देश या राष्ट्र के लिए प्रेरणादायिनी होने के साथ–साथ राष्ट्रीयता के प्रचार–प्रसार में सहायक होती है।

5. महान् लक्ष्य :

पत्रकारिता का लक्ष्य महान है। वह जनसामान्य की भावनाओं को अभिव्यक्त करने के साथ–साथ सूचना या संवाद भी देती है। राष्ट्र या देश की कोई भी समस्या पत्रकारिता द्वारा ही पता चलती है। रेडियो, टेलीविजन, फिल्म आदि मनोरंजन के महत्वपूर्ण साधन बन गए हैं। इसकी पूर्ति भी पत्रकारिता के माध्यम से होती है। इस प्रकार पत्रकारिता जनसामान्य की अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, साथ में मनोरंजन का सहज व सरल साधन भी हैं।

''पत्रकारिता एक कुशल चिकित्सक की तरह सामाजिक, राजनीतिक घटनाचक्र की नाड़ी को जाँचकर उसका उपचार करती है।''

(पत्रकारिता प्रशिक्षण : डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, राकेश शर्मा, पृ.सं. ५)

6. नीर-क्षीर विवेक :

सामान्यतः पत्रकारिता के संबंध में यह धारणा है कि वह नकारात्मक दृष्टिकोण लेकर चलती है लेकिन ऐसा नहीं है। एक रचनात्मक एवं विकासात्मक पत्रकारिता का लक्ष्य नीर–क्षीरवत् विवेचन करना है। इतना ही नहीं विवेचन करने के बाद निर्णय का काम भी पत्रकारिता करती है। पत्रकार के पास एक तीखी एवं तेज नजर तो होती ही हैं, बल्कि शिव की सी तीसरी आँख भी होती है। पत्रकारिता का यह काम किसी भी कुशल चिकित्सक जैसा ही है। इसके बाद पत्रकारिता के माध्यम से जो विकृत है उसका उपचार किया जाता है।

7. वैविध्यपूर्ण एवं व्यापक क्षेत्र :

पत्रकारिता का क्षेत्र वैविध्यपूर्ण एवं व्यापक है। पत्रकारिता के क्षेत्र में इतनी विविधता आ गई है कि उसे किसी सीमित परिधि में नहीं बांधा जा सकता है। आज जीवन का कोई भी विषय, कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जो पत्रकारिता से अछूता हो। आज स्थिति ऐसी है कि कोई भी विषय ले लीजिए सभी विषयों पर पत्र–पत्रिकाएँ उपलब्ध है। नवीनतम ज्ञान और जानकारी पत्रकारिता या मीडिया के माध्यम से ही मिलती है। अतः समाचार पत्र का रूप विविध रूपों वाला तो है ही, साथ में व्यापक भी है। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसमें पत्रकारिता का प्रवेश न हो।

''पत्रकारिता विशिष्ट देश, कला, परिस्थितिगत तथ्यों को अमूर्त, परोक्ष मूल्यों के सन्दर्भ और आलोक में उपस्थित करती हैं।'' – श्री प्रेमनाथ चतुर्वेदी

(पत्रकारिता : सिद्धांत और प्रयोग, डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, पृ.सं. ३)

8. जीवन का आधार :

पत्रकारिता जीवन का आधार है। मनुष्य आज बहुत व्यस्त है। वह चाहता है कि विश्व में घटने वाली घटनाओं का लेखा–जोखा उसे तत्काल ही मिल जाए। यह कार्य पत्रकारिता द्वारा आसानी से हो जाता है। जीवन का प्रत्येक क्षेत्र समाचार पत्रों से प्रभावित होता है, क्योंकि समाचार पत्र में प्रकाशित घटनाएँ एवं सूचनाएँ हमारे जीवन संदर्भों से जुडी हुई होती है। अतः सभी वर्ग के लोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति इसके माध्यम से करते हैं। समाचार पत्र मनुष्य के विचारों, मूल्यों और आदर्शों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

''पत्रकारिता वह विधा है, जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है। जो अपने युग और अपने संबंध में लिखा जाए, वही पत्रकारिता है।'' – डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र

(खोजी पत्रकारिता : डॉ. हरिमोहन एवं हरिशंकर जोशी, पृ.सं. १३)

9. वैश्वीकरण में सहायक :

पत्रकारिता वैश्वीकरण में महत्वपूर्ण सहायक हुई है। उसने विश्व की दूरी को समाप्त कर दिया है। सात समुद्र पार की दुर्घटना को कुछ ही समय में हम टेलीविजन न्यूज चैनल में देख लेते हैं और उसके लिए संवेदना प्रकट करने लगते हैं। यदि उस घटना का हम पर कोई अनुकूल प्रभाव होने वाला हो तो हम उससे लाभ उठा सकते हैं और प्रतिकूल प्रभाव होने वाला हो, तो हम उससे पहले ही सावधान हो सकते हैं। अतः कहा जा सकता है कि विश्वमतैक्य की भावना को सुदृढ़ करने में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान हैं।

10. परिवेश से साक्षात्कार :

मनुष्य को उसके परिवेश से जोडने का कार्य पत्रकारिता करती है। वह मनुष्य को उसके चारों तरफ हो रहे घटनाचक्रों से परिचित कराती है। हम पत्रकारिता के जरिए न केवल अपने परिवेश से परिचित से होते है, बल्कि दूरस्थ देशों से भी हमारा साक्षात्कार कुछ ही क्षणों में हो जाता है।

3.2. पत्रकारिता का उद्देश्य :

पत्रकारिता का उद्देश्य अतीत के गर्भ में छिपे हुए रहस्यों को अनावृत करके, वर्तमान की हर सांस व धड़कन का इतिहास और भूगोल जनता के सामने प्रस्तुत करना है। आज पत्रकारिता का उद्देश्य बहुआयामी हो गया है, जो केवल राजनैतिक घटनाओं से ही अवगत नहीं कराती है

बल्कि सोई हुई शक्ति को जगाना, जीवन के यथार्थ को उभारना, जिज्ञासाओं को शांत करना, आनंद, संतोष और मार्गदर्शन करना है। वह अतीत की संरक्षिका, वर्तमान की विश्लेषिका ही नहीं है अपितु भविष्य की नियामिका भी है। इस प्रकार पत्रकारिता जीवन की विविधात्मक, तथ्यात्मक और यथार्थ स्थितियों को जन सामान्य तक प्रेषित करने का सशक्त माध्यम है।

"Journalism is instant History, an account of history as it is being made."

- Ronald E. Nolseky

(Trends in Modern Journalism, M.C. Miller, Pg. No. 142)

पत्रकारिता का प्रमुख उद्देश्य सम्पूर्ण समाज में नव–संचार, सजीवता, जागरण, नवस्फूर्ति, सक्रियता और गतिमयता का संदेश का प्रचार और प्रसार करना है। पत्रकारिता के उद्देश्यों के बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये थे –

''पत्रकारिता का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं और विचारों को समझना तथा उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना, तथा तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भीकतापूर्वक प्रकट करना है।''

(हिन्दी पत्रकारिता का विकास, एन.पी. चतुर्वेदी, पृ.सं. २६७)

पत्रकारिता समाज में व्याप्त अन्याय और अत्याचार, दासता और दमन, शोषण और उत्पीड़न का उन्मूलन करने के लिए तथा सत्य, न्याय, और सुव्यवस्था की स्थापना के लिए लेखनी उठाता है। पत्रकारिता के दायित्व बहुआआयामी है। प्रारम्भिक पत्रकारिता के उद्देश्य हिन्दी प्रचार, राजनीतिक, सामाजिक जागृति, साहित्यिक–सांस्कृतिक संरक्षण आदि थे जबकि समकालीन पत्रकारिता का उद्देश्य है **"लोग जो माँगे वही देना चाहिए, हम जनता के विधागुरु नहीं, हम तो लोगों के सेवक है। ग्राहक को जिस माल की आवश्यकता हो, उसे ग्राहक तक पहुँचाकर उसे राजी ही दुकानदार का आदर्श हो सकता है। कहने का अभिप्राय यही है कि युग और परिवेश के साथ पत्रकारिता के उद्देश्य, रुचि, आदर्श एवं स्वरूप में मौलिक अन्तर आ गया है।"**

पत्रकारिता के तीन प्रमुख उद्देश्य :

सूचना देना :

सम्पादक अखबार के माध्यम से दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में होनेवाली घटनाओं की जानकारी देता है। पत्रकारिता प्रत्येक जन को विश्व में घटित होने वाली नवीनतम घटनाओं की जानकारी देती है। यही नहीं वह जनता को सरकार की नीतियों तथा कार्यों के बारे में भी अवगत कराती रहती है।

शिक्षित करना :

समाचार पत्रों के माध्यम से पाठकों को शिक्षित करना पत्रकारिता का लक्ष्य है। विज्ञान के क्षेत्र में, स्वास्थ्य संबंधी नयी खोज और मानवोपयोगी ज्ञान को जनता तक पहुँचाना समाचार पत्रों का सेवा–कार्य है। जनमत निर्धारित करने में भी पत्रकारिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विषम परिस्थिति में जनता को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसकी जानकारी पत्रकारिता ही देता है।

मनोरंजन :

पत्रकारिता जनता को ऐसे हास्य–व्यंग्य लेख तथा कार्टून का प्रकाशन करते है जिससे जनसामान्य पाठकों को ज्ञानवर्धन के साथ–साथ मनोरंजन भी प्राप्त होता है। पत्रकारिता में प्रकाशित होने वाले मनोरंजक लेखों को पाठक चाव से पढ़ते हैं और भरकर हँसते हैं। इस प्रकार पाठक स्वस्थ मनोरंजन प्राप्त करते हैं।

4. पत्रकारिता की आवश्यकता एवं महत्व :

प्रत्येक मनुष्य अपनी जिज्ञासा या कौतूहल को पूरा करना चाहता है। नित्य नवीन होने वाली घटनाओं से काफी जिज्ञासा उत्पन्न होती है। इस जिज्ञासा की पूर्ति पत्रकारिता करती है। पत्रकारिता हर क्षेत्र के लोगों की जिज्ञासा की पूर्ति करती है जैसे समाजशास्त्री को सामाजिक व्यवस्था के बारे में जानकारी देती है, साहित्यकारों को साहित्यिक जानकारियाँ और व्यापारियों को आर्थिक जानकारियाँ देती है।

''पत्रकारिता शीघ्रता में लिखा जाने वाला साहित्य है।''

– मैथ्यू आर्नल्ड

(आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, पृ.सं. ४२)

अतः मनुष्य को जाग्रत करने का प्रयोजन पत्रकारिता पूरा करती है। जिस प्रकार किसी पौधे के जीवन के लिए पानी, खाद और वायु की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार मनुष्य और समाज के सर्वांगीण विकास के लिए पत्रकारिता की आवश्यकता है।

पौराणिक युग में जो स्थान और महत्व नारद मुनि का था, वही स्थान और महत्व आज के युग में पत्रकारिता का है। उस समय नारद ही तीनों लोकों की खबरें देवताओं को दिया करते थे, आज वही काम पत्रकारिता करती है।

पत्रकारिता युग की ऊष्मा मापने का थर्मामीटर है तो वातावरण की सघनता–विरलता को अंकित करने का बैरोमीटर भी है क्योंकि समाज परिवेश का सामाजिक तापमान इसी से जाना जाता है और वह कभी सतह पर और कभी गहराई में उतर कर अपने प्रयत्न से सिद्ध फल को सामने ले आता है और समाज की मुक्त जीवन सरिता के साथ प्रवाहित होता है।

''पत्रकारिता एक प्रकार से सूचना देने वाला 'मौसमी पक्षी' होता है।''

(संचार और फोटो पत्रकारिता, डॉ. रमेश मेहरा, पृ.सं. १२६)

श्री विद्यालंकार ने पत्रकारिता को 'पाँचवाँ वेद' माना है। पत्रकारिता समाज का अविभाज्य अंग है। पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा ही आधुनिक समाज सामूहिक जानकारी और दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं और अपने लिए भविष्य का मार्ग चुनते हैं। पत्रकारिता जन सूचना तो देती ही है साथ में जन–शिक्षण तथा जन–जागृति, लोकरंजना, लोक–कल्याण व राष्ट्र–प्रेम को प्रभावित करती है।

अतः पत्रकारिता ज्ञान के प्रकाशक मनोंरजन की दात्री, दैनंदिन घटनाओं की विस्तृत विवरण करने वाली, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, साँस्कृतिक और साहित्यिक परिस्थितियों की व्याख्याता और व्यापक भूमिका पर व्यक्ति को विश्व मानव सवे प्रतिवहन करने वाला अनिवार्य साधन है। इस प्रकार सामान्य पाठक के ज्ञानवर्द्धन, रुचि परिष्करण, वस्तु–स्थिति के चित्रण, जनमत निर्माण में पत्रकारिता का विशेष महत्व है। अतः

पत्रकारिता सामयिक जीवन की प्राणवायु के सदृश्य है। आदर्शों से प्रेरित पत्रकारिता के सन्दर्भ में निम्नलिखित शाश्वत महत्व की परिभाषा सतत ध्यातव्य हैं।

★ पत्रकारिता व्याकुल विचार–दृष्टि हैं।

★ पत्रकारिता मर कर जीने की कला है।

★ पत्रकारिता वैचारिक चेतना का उद्वेलन है।

★ पत्रकारिता काल–धर्म की तीसरी आँख है।

★ पत्रकारिता समाज की वाणी और मस्तिष्क है।

★ पत्रकारिता घटनाओं की प्रबुद्ध पूर्वापेक्षा की कला है।

★ पत्रकारिता समाज की शास्त्रार्थ भूमि है।

★ पत्रकारिता लोकनायकत्व की सहज विधा है।

★ पत्रकारिता समय और समाज की नियामिका है।

★ समाज और संस्कृति के साथ संवाद का ताजा इतिहास ही पत्रकारिता है।

★ समाचार–विचार की रचनात्मकता से हट कर अधिकतम प्रसाार, विज्ञापन, मुनाफा की कारीगरी ही पत्रकारिता है।

★ पत्रकारिता सत्य का शोध एवं मूल्य प्रतिष्ठापना का सतत संघर्ष है।

5. पत्रकारिता के विविध क्षेत्र :

जीवन की विविधता और संचार–साधनों की प्रचुरता ने पत्रकारिता को बहुआयामी बना दिया है। जीव–जगत् के हर कोने में पत्रकारिता पैठ गई है। उसके विविध रूप निम्नलिखित हैं –

❖ **अन्वेषी अथवा खोजी पत्रकारिता : (Investigative Journalism)**

जिस पत्रकारिता में जासूसी को प्रस्तुत किया जाता है उसे खोजी पत्रकारिता कहा जाता है। इसमें पत्रकार अपने प्रतिभा और तत्परता के बल पर शारीरिक जोखिम उठाकर गुप्तचर के रूप में कार्य करते हैं। जिन तथ्यों अथवा सूचनाओं को जानबूझकर छिपाना चाहे, उन्हें चुपचाप पूरे परिप्रेक्ष्य में ठोस प्रमाणों के साथ उद्घाटित करने की तकनीक खोजी पत्रकारिता कहलाती है। इसमें काल्पनिक प्रसंगों, अफवाहों के लिए कोई स्थान नहीं। कितनी ही बड़ी घटना हो, कैसा ही गंभीर घोटाला हो, खोजी पत्रकार को उसकी तह तक जाना होता है। उसकी तह में छिपे रहस्यों को, सारे तथ्यों को खोजकर तार्किक ढंग से उनका संयोजन कर सावधानीपूर्वक उनका प्रकाशन करना होता है।

❖ **आर्थिक एवं वाणिज्य पत्रकारिता : (Economical and Commercial Journalism)**

जीवन का प्रत्येक क्षेत्र अर्थ से प्रवाहित है। अर्थ से सम्बन्धित कार्यकलापों को उजागर करने के लिए आर्थिक पत्रकारिता काफी विकसित

हो गई है। मुद्रा बाजार, पूंजी बाजार, वस्तु बाजार, पंचवर्षीय योजना, ग्रामोद्योग, श्रम बजट और राष्ट्रीय आय के समाचार अब पाठकों को अधिक आकर्षक कर रहे है। 'दी इकोनॉमिक टाइम्स', 'व्यापार भारतीय', 'फाइनेंशियल एक्सप्रेस', 'व्यापार केसरी' आदि महत्वपूर्ण समाचार पत्रों द्वारा उद्योग एवं वाणिज्य व्यवसाय की जानकारी दी जा रही है।

"The style of writing characteristic of material newspaper and magazines, consisting of direct presentation of facts or occurences with little attempts at analysis or interpretation."

- American Heritage Dictionary

❖ **ग्रामीण एवं कृषि पत्रकारिता : (Rural and Agricultural Journalism)**

भारत वर्ष की अधिकांश जनता शहरों की अपेक्षा गाँवों में बसती है। देश के स्वतंत्र होने के 58 वर्ष बाद भी गाँव पिछडे हुए हैं। दूर गाँवों में नई चेतना के तथा विकास के स्वर को समाचार पत्र ही पहुँचा सकते है। इस संदर्भ में सुप्रतिष्ठित पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी ने कहा है, 'राष्ट्र महत्वों में नहीं रहता। प्रकृत राष्ट्र के निवास स्थान वे अगणित झोपड़े है जो गाँवों और पूरवों में फैल हुए, खुले आकाश के देदीत्यमान सूर्य और शीतल चन्द्र और तारावरण से प्रकृति का संदेश लेते हैं। इसलिए राष्ट्र का मंगल और उसकी जड़ उस समय तक मजबूत नहीं हो सकती है जब तक कि अगणित

लहलहाते पौधों की जड़ों में जीवन का जल नहीं सींचा जाता।'' अतः हमारा देश गाँवों का देश है।

❖ **व्याख्यात्मक पत्रकारिता : (Interpretative Journalism)**

जैसा कि नाम से स्पष्ट है इस पत्रकारिता के अन्तर्गत समाचार कार्यालय में समाचार एजेंसियों तथा संवाददाताओं द्वारा प्रेषित समाचारों का विश्लेषण, उनकी पृष्ठभूमि और उनके भविष्य में होने वाले परिणामों की व्याख्यात्मक पत्रकारिता द्वारा समाधान दिया जाता है। बहुत समय पहले उसी संवाददाता को सफल माना जाता था जो नारद जी की तरह घुमक्कड़ी होता और दौड़ धूप के बाद तथ्यों को एकत्रित करता था। अब समय बदल गया है और इस कार्य के लिए समाचारा एजेंसियाँ जगह–जगह पर कार्यरत है जो शीघ्र–से–शीघ्र समाचार पहुँचाने का कार्य कर रही हैं। ऐसी पत्रकारिता का उद्देश्य समाचारों के यथार्थ परिवेश में उनका मूल्यांकन करना है।

❖ **विकास पत्रकारिता : (Development Journalism)**

जिस पत्रकारिता में सामाजिक, आर्थिक और वैज्ञानिक प्रगति से सम्बन्धित विकास के समस्त पक्षों पर प्रकाश डाला जाता है उसे विकास पत्रकारिता कहते है। पहले लोगों की यह धारणा थी कि पत्रकारिता का सम्बन्ध केवल राजनीति से है लेकिन विकास पत्रकारिता से यह भ्रम दूर हो गया। विकास पत्रकारिता विकास पर केन्द्रित होती है चाहे वह विकास

औषधि, उद्योग, विज्ञान अथवा अन्य किसी भी क्षेत्र में हो प्रान्तीय सरकारें अपने विकास कार्यक्रमों को जनता तक पहुँचाने के लिए पत्रिकाएँ निकालती हैं।

"Journalism, the collection and periodic publication or transmission of news through media such as newspaper, periodical, television and radio."

- Encyclopedia Britannica

❖ **खेल पत्रकारिता : (Sports Journalism)**

आजकल सभी समाचार पत्रों में विविध खेलों के सम्बन्ध में अलग से पृष्ठ प्रकाशित हो रहा है। खेलों के विषय में दो प्रकार के समाचार लिखे जाते हैं – अग्रिम तथा चल। अग्रिम लेखों में सम्मिलित होने वाली टीमें, खिलाड़ियों के नाम, क्रीड़ा–व्यवस्थास और खेल–विशेष की पृष्ठभूमि को दिया जाता है जबकि चल लेख में खेल का निष्पक्ष और समीक्षात्मक विश्लेषण किया जाता है। समाचार को रोचक और आकर्षक बनाने के लिए लेखक तथ्यों, टिप्पणियों, उक्तियों आदि का प्रयोग करता है। वह खेल के पूर्व इतिहास की पृष्ठभूमि का भी व्यवहार करता है। अतः खेलों के सम्बन्ध में आज पाठकों की रुचि अधिक बढ़ी है।

❖ **संदर्भ पत्रकारिता : (Reference Journalism)**

संदर्भ पत्रकारिता में कार्यरत व्यक्ति सम्पादकों, संवाददाताओं, प्रशासनिक अधिकारियों और स्तम्भ लेखकों को उनकी आवश्यकता के अनुसार संदर्भ की आपूर्ति द्वारा सक्षमता प्रदान करता है। यह पत्रकार पत्रकारिता और पुस्तकालय विज्ञान में प्रशिक्षित 'विश्वकोश' होता है जो सभी की सहायता पुरानी कतरनों, लेखों, संदर्भ ग्रंथों, फोटो की प्रस्तुति द्वारा करता है। विभिन्न पत्रिकाएँ अपनी 'इयर बुक' निकालती है।

❖ **संसदीय पत्रकारिता : (Parliamentary Journalism)**

इस पत्रकारिता के अन्तर्गत संसद के दोनों सदनों, विधान सभाओं, परिषदों की कार्यवाही की रिपोर्ट में काफी सावधानी बरती जाती है। जरा–सी असावधानी होने पर संसद की अवमानना का प्रश्न उठ सकता है। अतः संसदीय पत्रकारिता में सावधानीपूर्वक कार्य किया जाता है। संसद की पत्रकार–दीर्घा में सुप्रतिष्ठत पत्रकार को 'राष्ट्र की चौथी सत्ता' के रूप में जाना जाता है। संसद में हो रही कार्यवाही को पत्र–पत्रिकाओं, रेडियों, टेलीविजन और इंटरनेट आदि के लिए प्रस्तुत करना इसका लक्ष्य रहता है।

❖ **फिल्म/चित्रपट पत्रकारिता : (Film Journalism)**

आज अधिकतर समाचार पत्र–पत्रिकाओं में फिल्मों के सम्बन्ध में एक कॉलम, कभी–कभी पूरे पृष्ठ पर ही फिल्मी समाचार दिये जाते हैं। क्योंकि पाठकों की रुचि फिल्मों और फिल्मी हस्तियों के बारे में जानने की

रहती है। फिल्मी कलाकारों के साक्षात्कार, उनके व्यक्तिगत अनुभव, बन रही व आने वाली फिल्मों तथा अन्य फिल्मों से सम्बन्धित समस्त जानकारी फिल्म पत्रकारिता के अन्तर्गत आती है। फिल्मी पत्रकार मिर्च–मसाला लगाकर ऐसे कॉलमों को प्रस्तुत करते है और पाठक इन्हें चटकारे ले–लेकर पढ़ते है। माया नगरी में घूमने वाले पत्रकारों की यह रोचक सामग्री चित्रपट पत्रकारिता कहलाती है।

❖ रेडियो पत्रकारिता : (Radio Journalism)

रेडियो पत्रकारिता में समाचार–वाचन, समाचार–दर्शन, सामूहिक समीक्षा आदि का समावेश होता है। रेडियो के लिए समाचार संकलन, अनुवाद, संवाद समीक्षा इसके मुख्य अंग है। रेडियो के लिए फीचर लिखना, सामयिक विषयों की चर्चा करना ही नहीं, कहानी, कविता, नाटक लिखना भी एक तरह से रेडियो पत्रकारिता के अन्तर्गत समाहित है।

❖ दूरदर्शन पत्रकारिता : (Television Journalism)

दूरदर्शन पत्रकारिता में चित्र और ध्वनि के प्राविधिक ज्ञान, लेखन और वाचन की क्षमता तथा इलेक्ट्रॉनिकी की जानकारी के द्वारा सफलता प्राप्त होती है। दूरदर्शन पत्रकार को अपने साथ फोटोग्राफरों को ले जाना पड़ता है। फोटोग्राफर चित्रों से तथा पत्रकार अपनी लेखन और वाचन कला से इसे रोचक और प्रभावशाली बनाता है।

❖ **विधि पत्रकारिता : (Law Journalism)**

इस पत्रकारिता के अन्तर्गत देश के कानूनों, मौलिक अधिकारों, मान–हानि, अदालत अवमानना, अपमान लेख, सार्वजनिक व्यवस्था, विदेशी राज्यों के साथ सम्बन्ध, भारतीय डाक–तार अधिनियम, समुद्र सीमा शुल्क, पुस्तक पंजीयन नियम, कापीराइट अधिनियम आदि अनेक विधियाँ आ जाती है। विधि पत्रकार को इन सभी कानूनों की जानकारी होनी चाहिए। तभी वह विधि पत्रकारिता में सफल हो सकता है।

❖ **अंतरिक्ष पत्रकारिता : (Space Journalism)**

21वीं सदी का युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है, जिसमें सूचना का आधार आकाशीय ग्रह और उपग्रह बन चुके हैं। कृत्रिम उपग्रहों के कारण संचार की दुनिया में क्रान्ति आ गई है। अंतरिक्ष संचार प्रणाली के कारण समाचारों और चित्रों का सम्प्रेषण हो रहा है। उपग्रहों के कारण एक ही समाचार पत्र के कई संस्करण प्रकाशित हो रहे हैं। इलैक्ट्रॉनिक्स विधियों से समाचार, शीर्षक, लेख, फोटो, विज्ञान को कमाण्ड देकर वीडियो स्क्रीन पर देखकर महत्व के आधार पर पृष्ठ का समायोजन कर लिया जाता है।

निष्कर्ष :

संसार में हर क्षण कुछ–न–कुछ नया घटित होता है। मानवीय समाज को विविध प्रकार की क्रिया–कलापों की एक जीवन्त प्रयोगशाला कहा जाता है। हर पल घटने वाली घटनाओं को जानने की उत्सुकता मनुष्य में

प्राकृतिक रूप में मौजूद है। घटित घटनाओं को पूरे समाज तक पहुँचाने का काम पत्रकारिता करती है। डॉ. धर्मवीर भारती ने पत्रकारिता की परिभाषा देते हुए कहा है कि – "पत्रकारिता केवल खबरें इकट्ठा करना और छापना मात्र नहीं है वह मनुष्य और मनुष्य के बीच का सम्प्रेषण सामयिकता और इतिहास का सम्पूर्ण गति से जोड़ने का प्रयास है और कुल मिलाकर समाज के बाहरी विवरण के साथ–साथ उसके आन्तरिक अर्थ को जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास है और बनते हुए इतिहास को मानवीय मूल्य–मर्यादा की ओर मोड़ते रहने का अनवरत साधन है।"

सारांश यहीं है कि ज्ञान और विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ शब्द, ध्वनि तथा चित्रों के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है। यह वह विधा है जिसमें सभी प्रकार के पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों और लक्ष्यों का विवेचन होता है। पत्रकारिता समय के साथ समाज की दिग्दर्शिका और नियामिका है।